मेरा नाम है - जॉर्जिया

जीयानेट विंटर, हिंदी : विदूषक

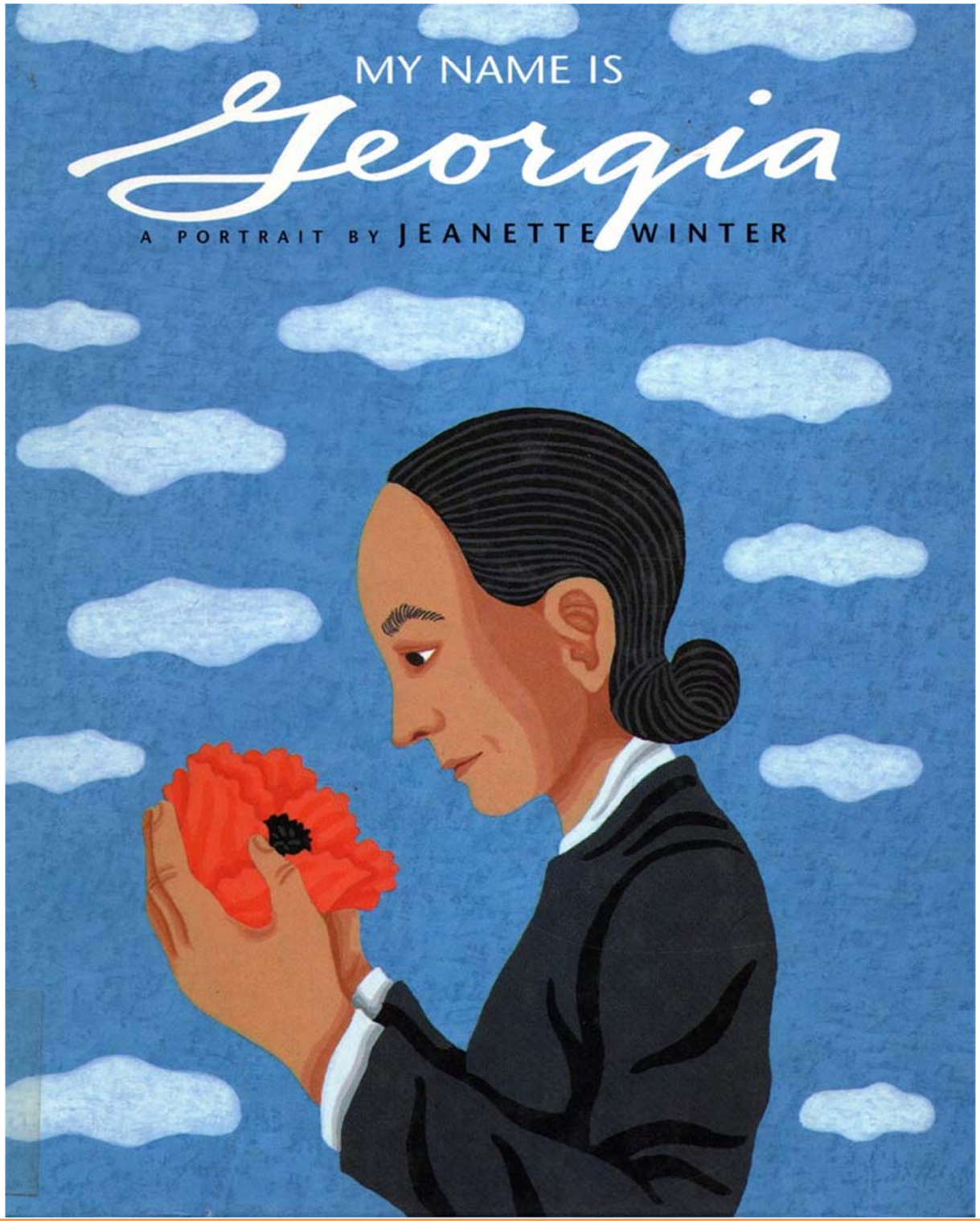

मैं बहुत ऊँचाई पर बादलों में रहती थी.
मुझे अपनी खिड़की से जो दिखता था, मैं वही पेंट करती थी. बचपन से ही **जॉर्जिया ओकीफ** दुनिया को, अपनी एक खास नज़र से देखती थीं.

तारों भरी रात में वो आसमान की सीढ़ी चढ़तीं और फिर सूरज उगने का इंतजार करतीं.

सुबह-सुबह और चांदनी रात में वो पहाड़ियों में घूमतीं. वो हड्डियाँ और पत्थर इक्कठा करतीं और घर लाकर उन्हें पेंट करतीं. ज़िन्दगी में वो क्या करना चाहती थीं, वो उन्हें शुरू से ही मालूम था – यानि उन्हें अपने दिल की ख्वाइश पता थी – वो एक आर्टिस्ट बनना चाहती थीं.

जॉर्जिया ओकीफ का जन्म 1887 में विस्कॉन्सिन, अमेरिका के एक फार्म पर हुआ.

12 साल की उम्र में मुझे पता था,

कि मैं क्या बनाना चाहती हूँ – एक आर्टिस्ट.

मुझे क्या चाहिए यह मुझे हमेशा से पता था.
जब मैं छोटी थी तो मैं बस घंटों खेलती ही रहती थी.
बिल्कुल अकेले में, मैं बहुत संतुष्ट रहती थी.

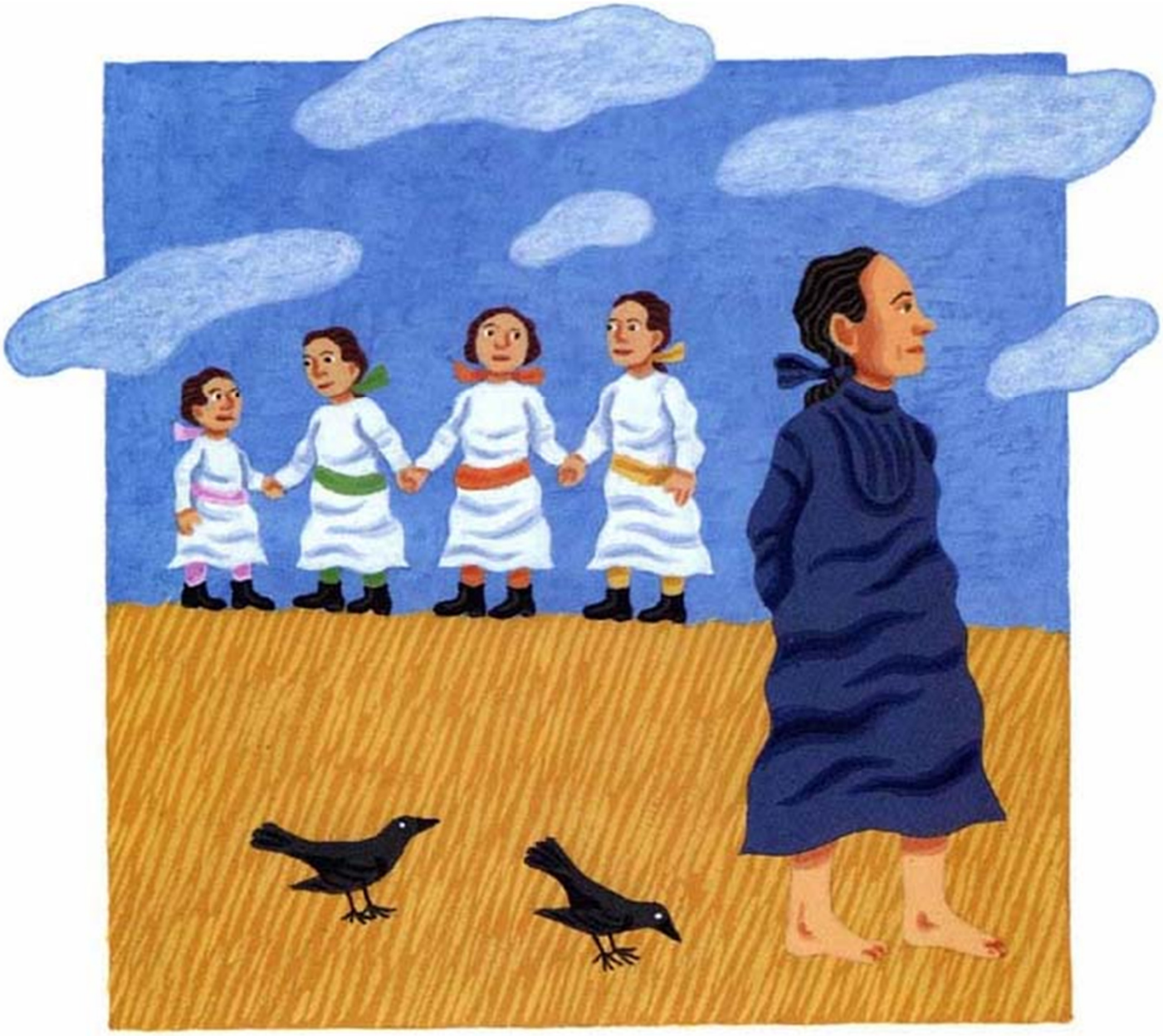

मैं वो चीज़ें करती थी, जो और लोग नहीं करते.

जब मेरी बहनें कमरबंद पहनतीं – तो मैं उसे नहीं पहनती.

जब मेरी बहनें मोज़े पहनतीं –

तो मैं उन्हें बिल्कुल नहीं पहनती.

जब मेरी बहनें चोटियाँ बनातीं

– तो मैं अपने बालों को हवा में मुक्त उड़ने देती.

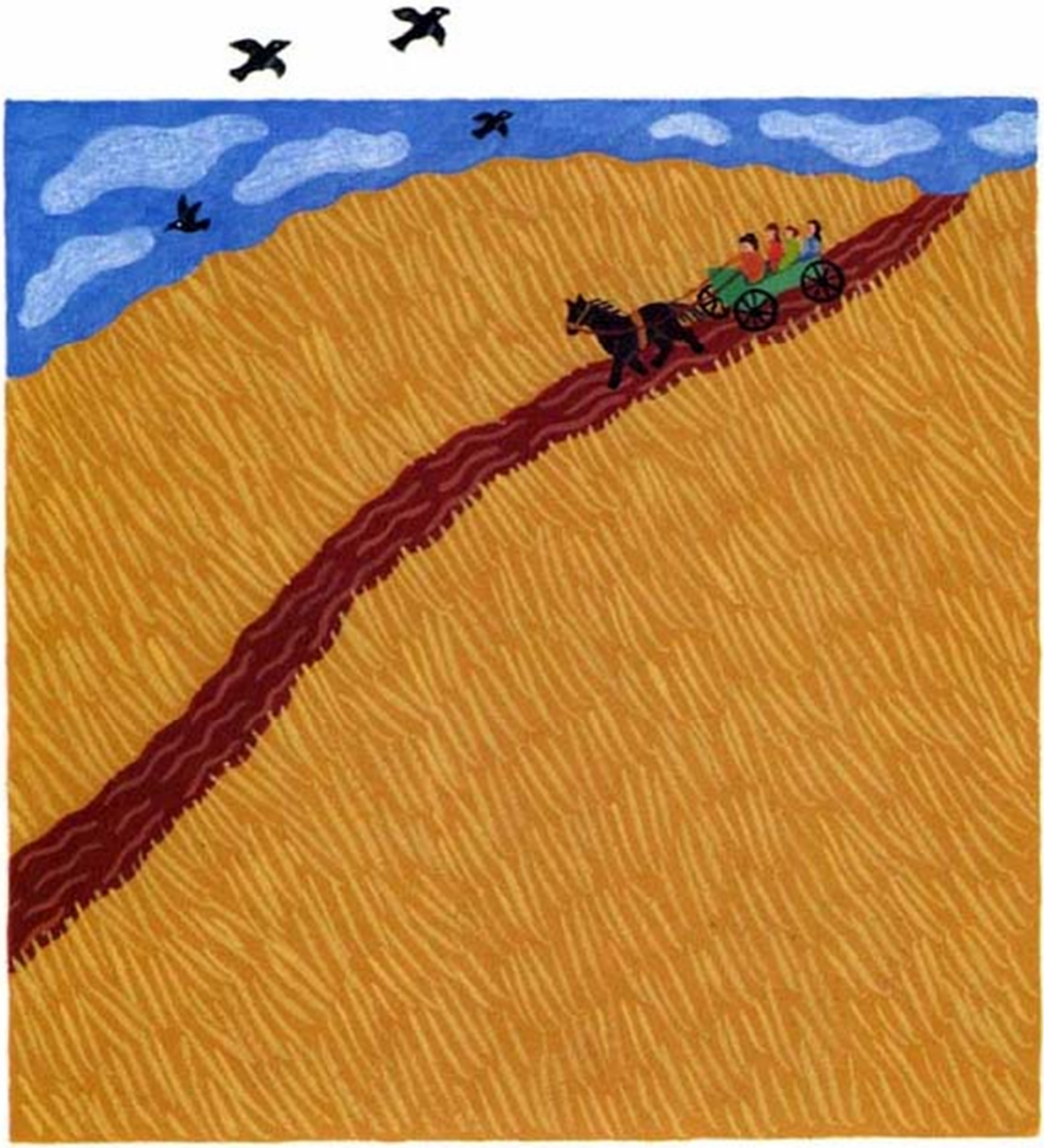

हर शनिवार को मैं शहर जाती. वहां मैं आर्ट टीचर की अल्मारी में से चित्र निकालकर, उनकी नक़ल करती.

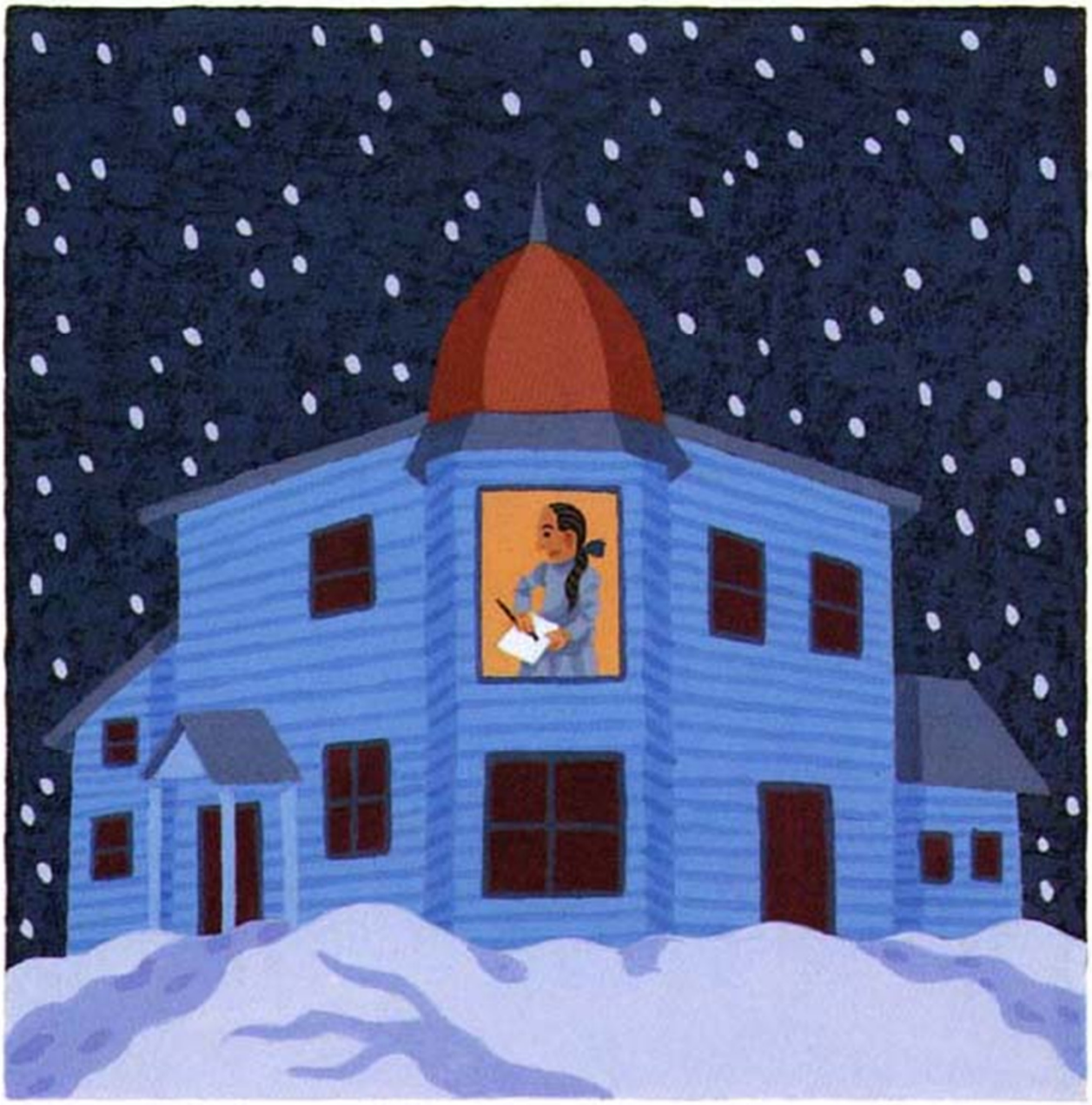

घर की अपनी खिड़की के बाहर
मैं घंटों देखती रहती
और जो भी मुझे दिखता
मैं उसके चित्र बनाती.

शायद मैं कुछ सुन्दर रच सकती थी .....
शिकागो के आर्ट स्कूल में
मैं म्यूजियम में जाकर,
स्मारकों और मूर्तियों की नक़ल करती.

न्यूयॉर्क के स्कूल में मैं रोजाना,
किसी जीवित व्यक्ति का चित्र बनाती.
यह काम मैं हर रोज़-रोज़ करती.
स्कूल में मैं, टीचर की बताई चीज़ें पेंट करती थी.

स्कूल ख़त्म होने के बाद
मैं इस बड़ी दुनिया में
अपने खुद के विचारों को
खोजने निकल पड़ी.

मैं टेक्सास गई – बचपन की किताबों में,

वहां के दृश्यों की यादें,

मेरे ज़हन में अभी भी तरोताजा थीं.

... तुमने कभी आसमान नहीं देखा.

वो बेहद हसीन है.

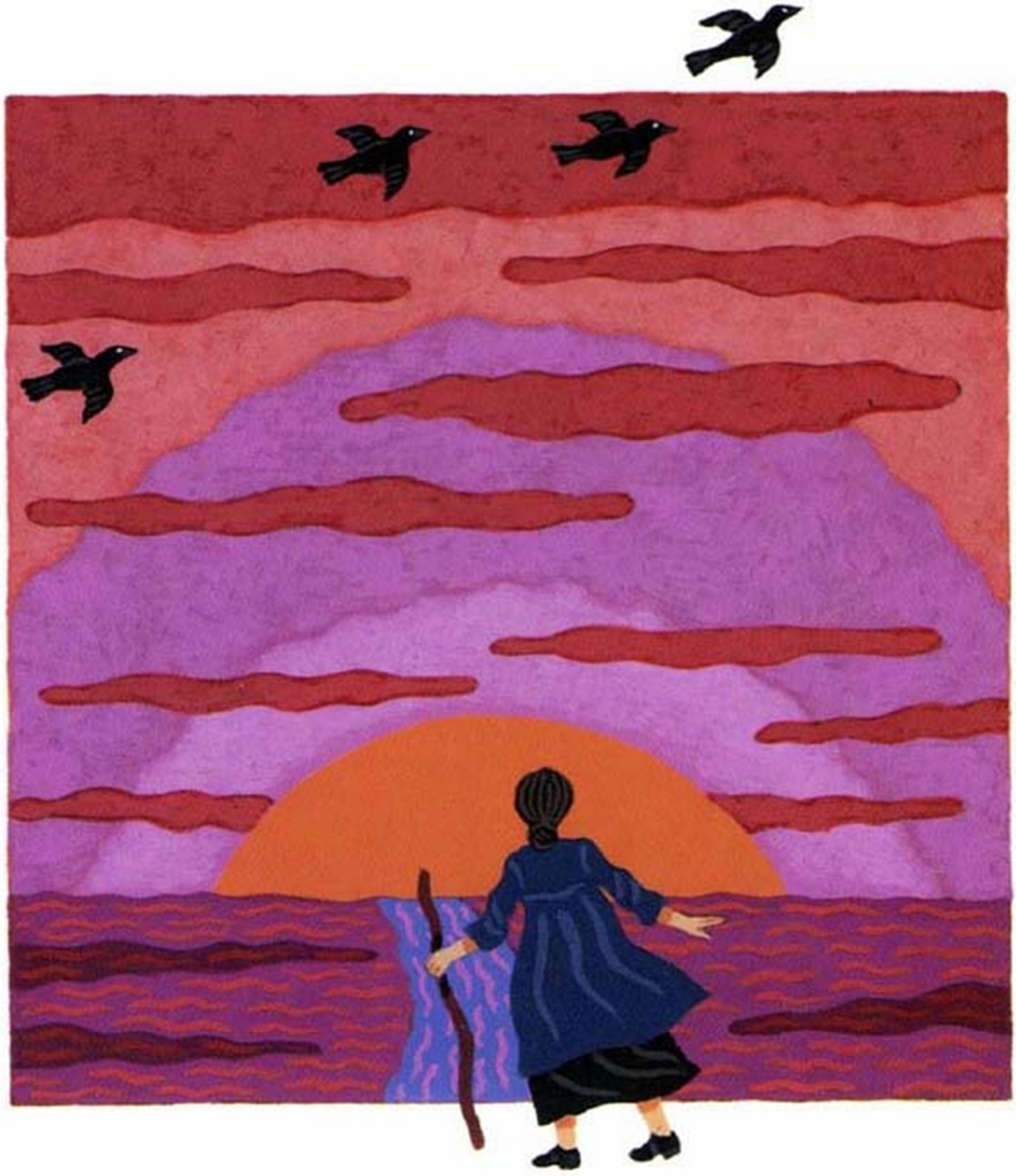

... मैं सूर्यास्त में चली.

मैंने वहां की तेज़ मैदानी हवाओं को
करीबी से महसूस किया.

बाद में मैंने वहां के सूर्यास्त और आसमान पेंट किए.
वहां का अकेलापन और गज़ब का सूनापन
मैंने गहराई से महसूस किया.
मैं वहां दिन-रात पेंट करती रहती.

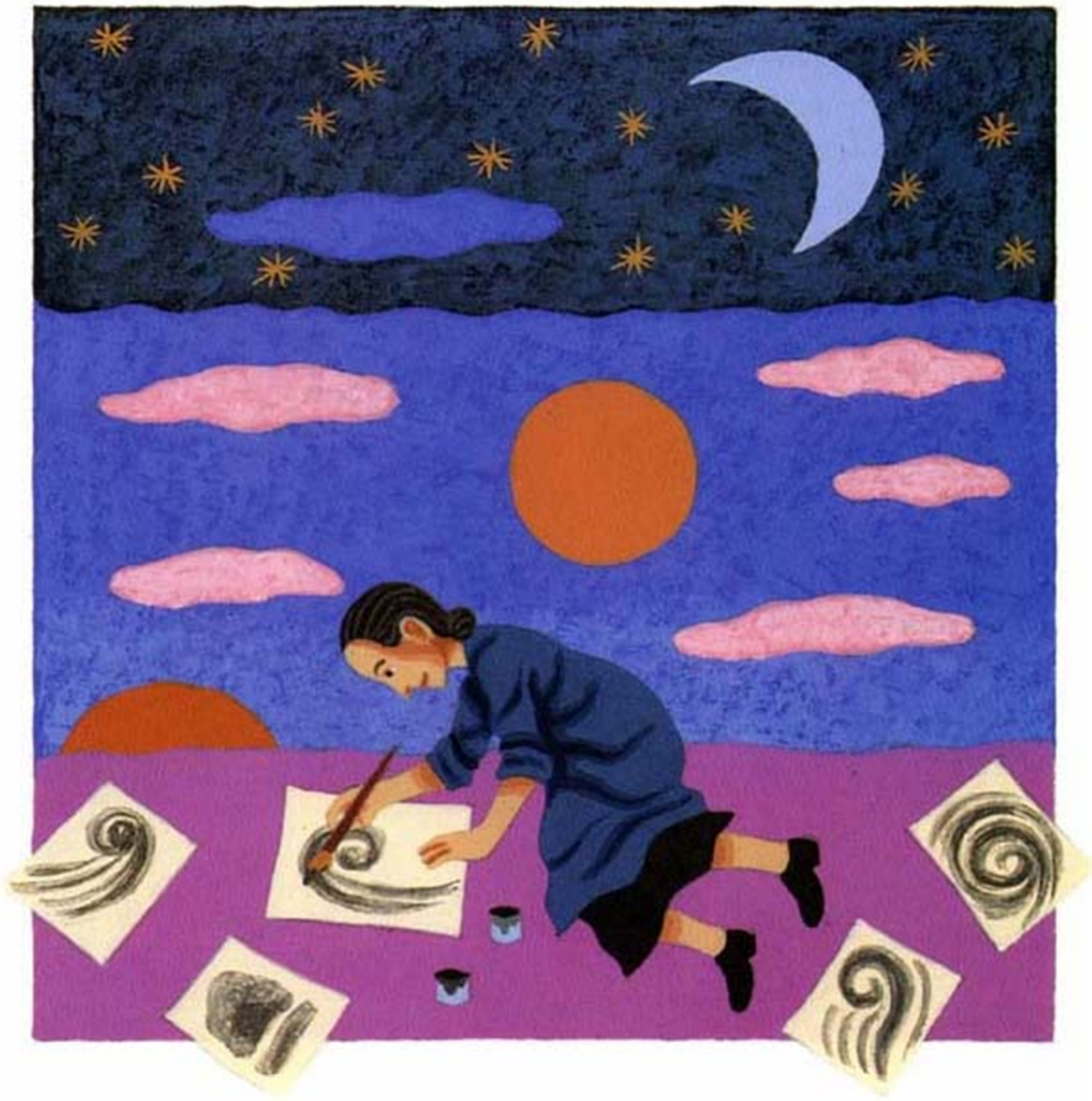

मैं न जाने कब तक पेंट करती रही.

अंत में मेरा सर लट्टू जैसे घूमने लगा.

मेरे दिमाग में ऐसी तमाम बातें भरी हैं

– जो कभी किसी ने मुझे सिखाई नहीं.

तमाम आकार और विचार मेरे दिमाग में भरे हैं.

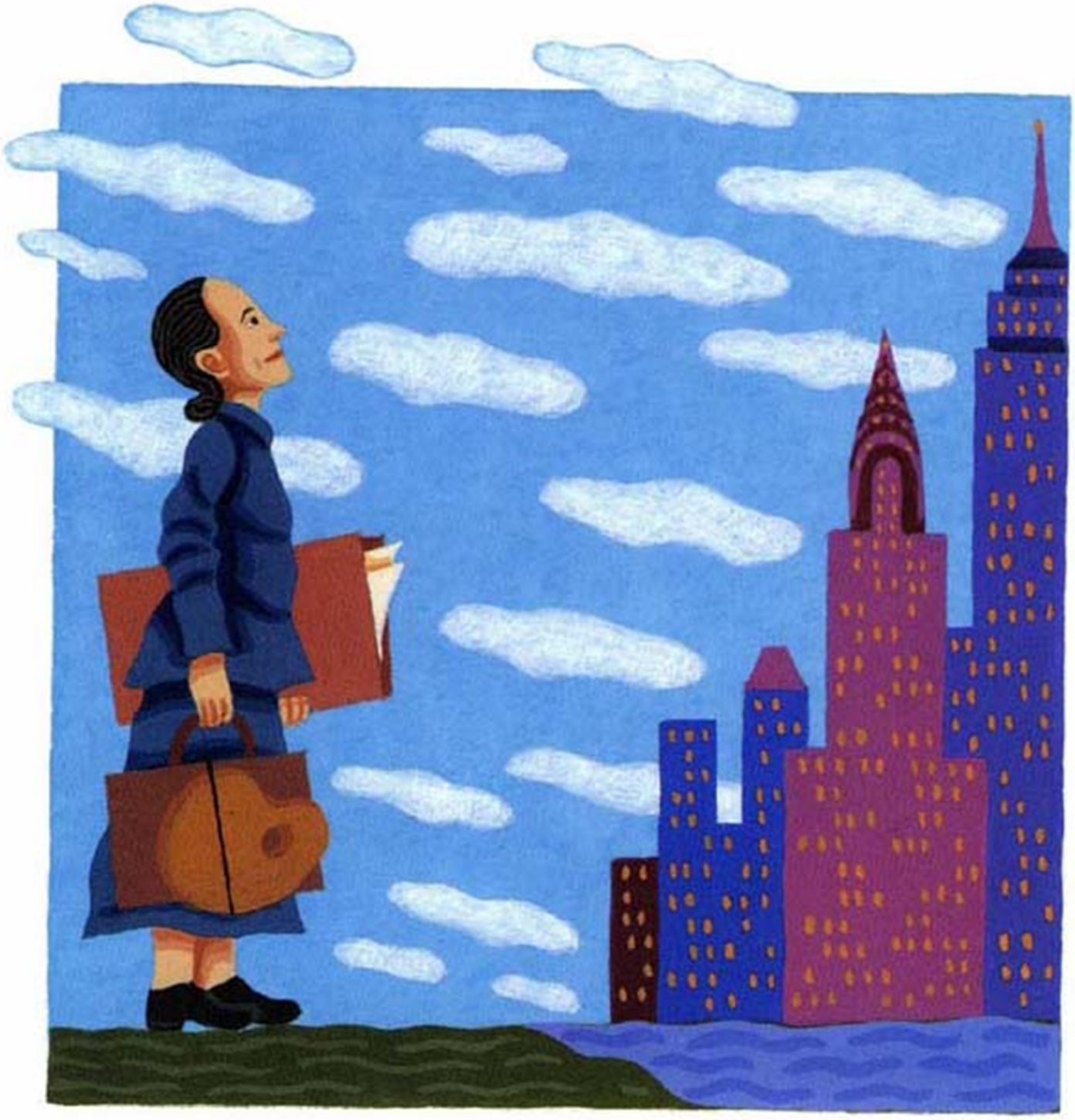

बाद में मैंने अपनी पेंटिंग्स को इक्कट्ठा किया
और फिर मैं न्यूयॉर्क शहर गई.
अन्य आर्टिस्टों के साथ रहने.

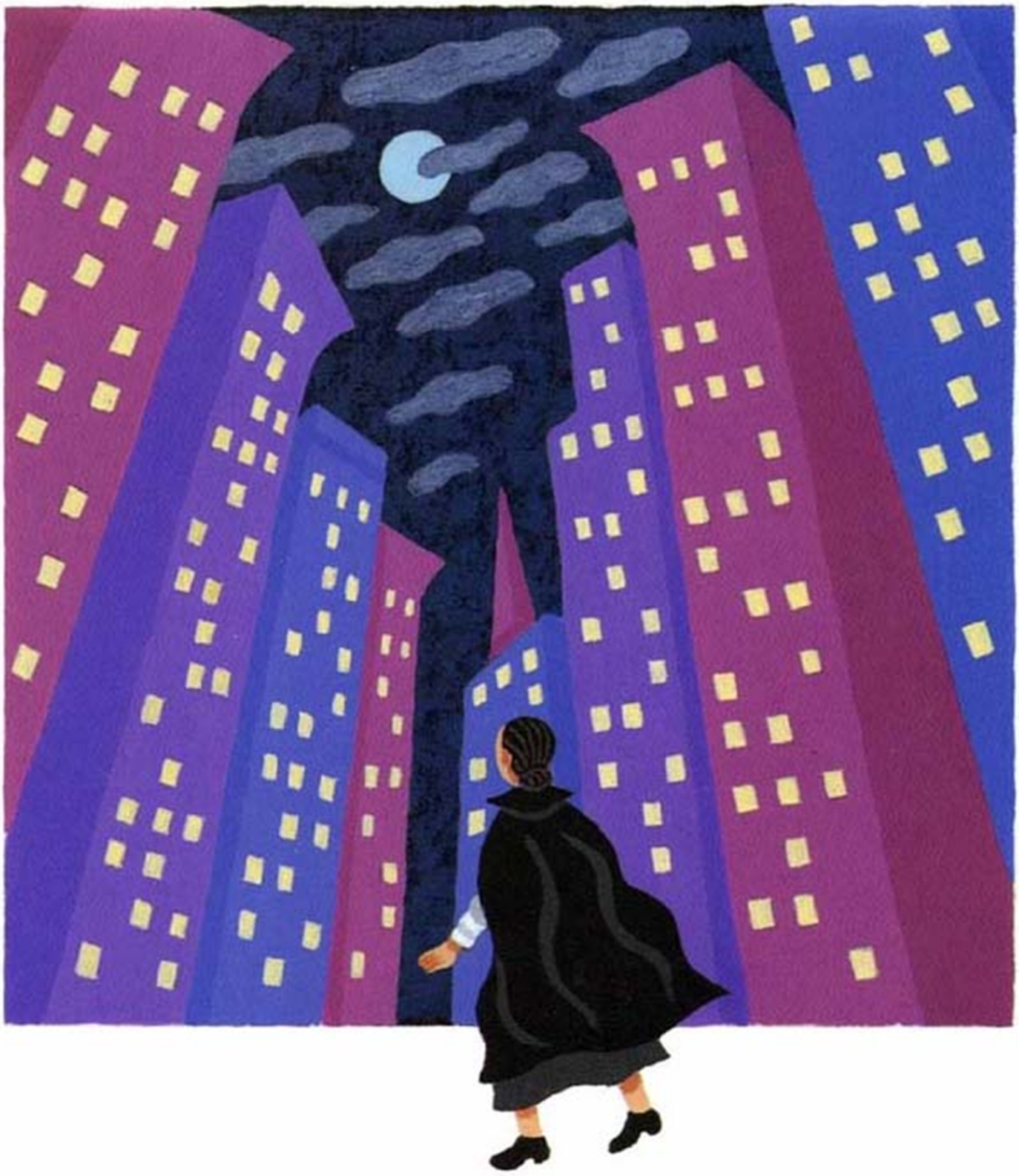

वहां मुझे स्टील की ऊंची-ऊंची
अट्टालिकाओं पर चढ़ना पड़ा.

मैं वहां ऊपर बादल में रहती
और जो कुछ मुझे अपनी खिड़की से दिखता,
उसे मैं पेंट करती.

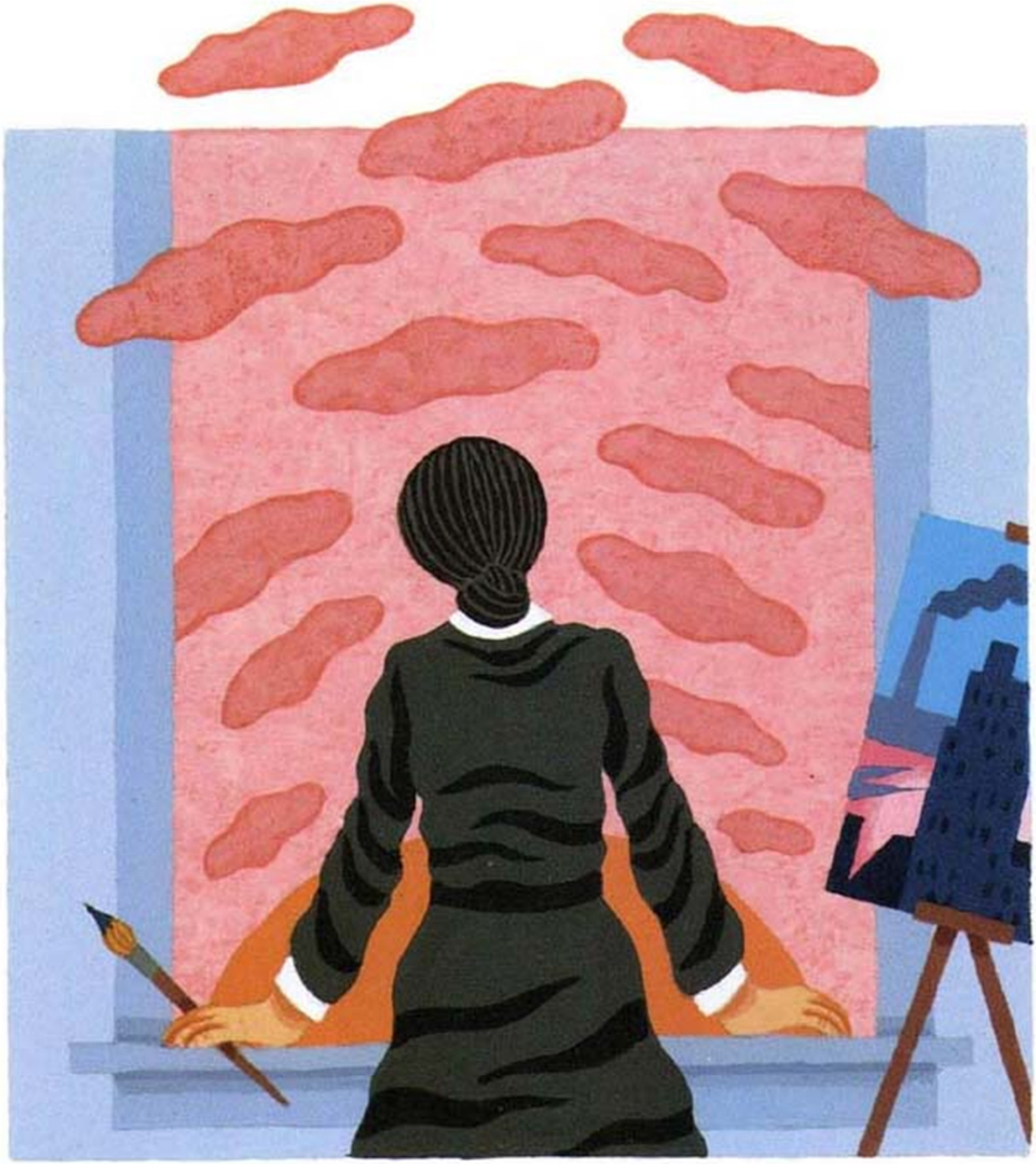

पर अक्सर मुझे, जो खिड़की से दिखता
वो कोई दूर-दराज़ की चीज़ थी,
वो मुझे लगातार बुला रही थी.

फिर मैंने शहर में एक बाग़ पेंट किया.
मैं चाहती थी कि सब लोग फूलों को उसी तरह देखें
जैसे मैं उन्हें देखती थी.

मैंने फूलों को बड़ी बारीकी से देखा.

फिर मैंने एक चमेली का फूल पेंट किया.
मैंने बहुत बड़ा फूल बनाया,
जिससे फूल, लोगों का ध्यान आकर्षित करे.

मैंने एक और फूल पेंट किया,
मैंने इस फूल को भी बहुत बड़ा बनाया
जिससे फूल, लोगों का ध्यान आकर्षित करे.

फिर मैंने अनेकों फूल पेंट किए
पॉपी (अफीम), पेटूनिया और सूरजमुखी,
मैनें अनेक रंग-बिरंगे फूल पेंट किए.
मेरा बगीचा खिल उठा, और सब लोगों ने
फूलों को उसी तरह देखा जैसे मैं उन्हें देखती थी.

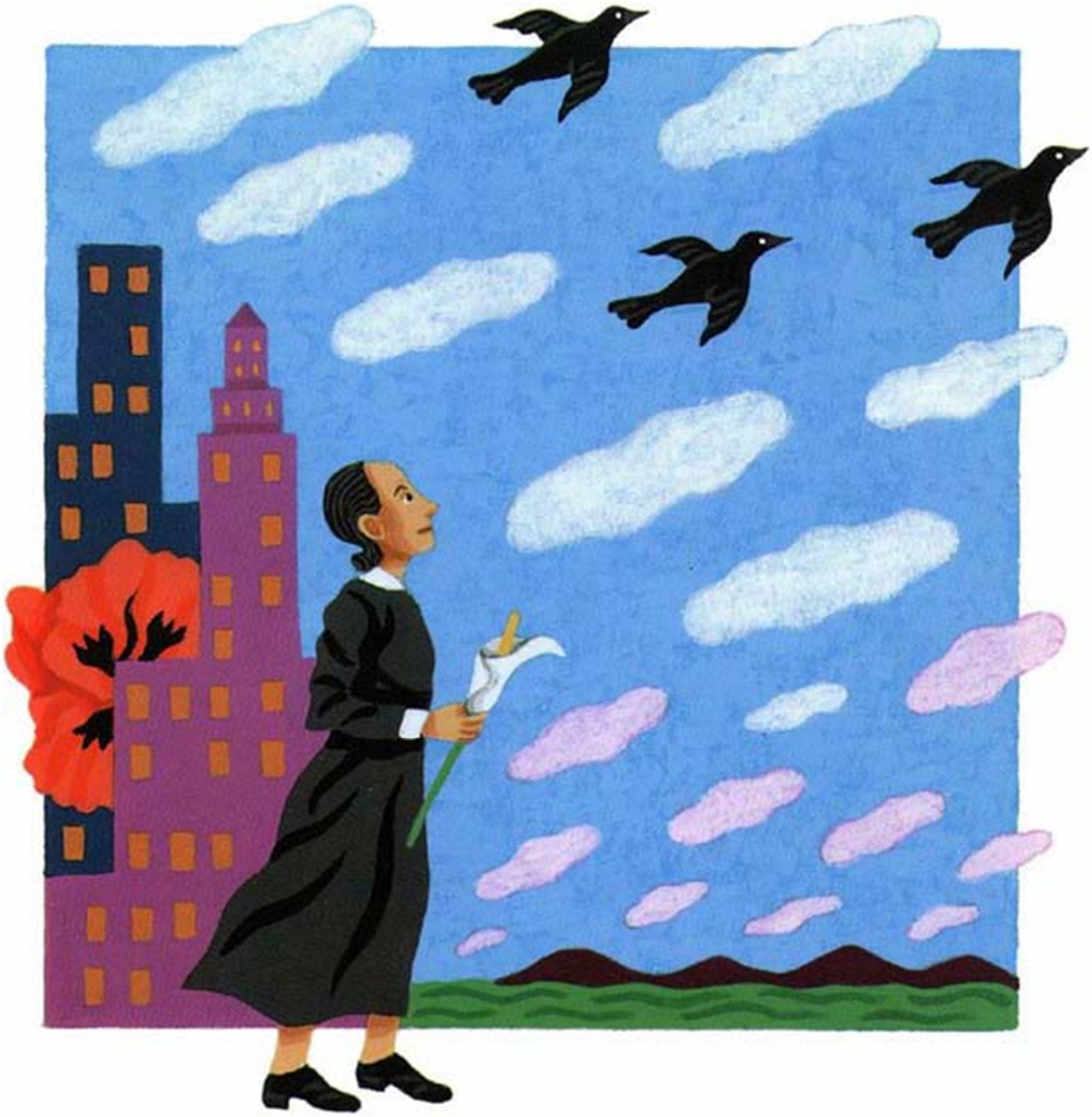

पर फिर भी मैं,

आसमान को देखते-देखते कभी थकती नहीं.

वो दूरी हमेशा मुझे अपने पास बुलाती थी.

फिर मैं न्यू मेक्सिको के रेगिस्तान में गई.

मैं वहां गई, जहाँ अक्सर कोई और नहीं जाता.

वहां अकेले में, मुझे बेहद संतोष मिला.

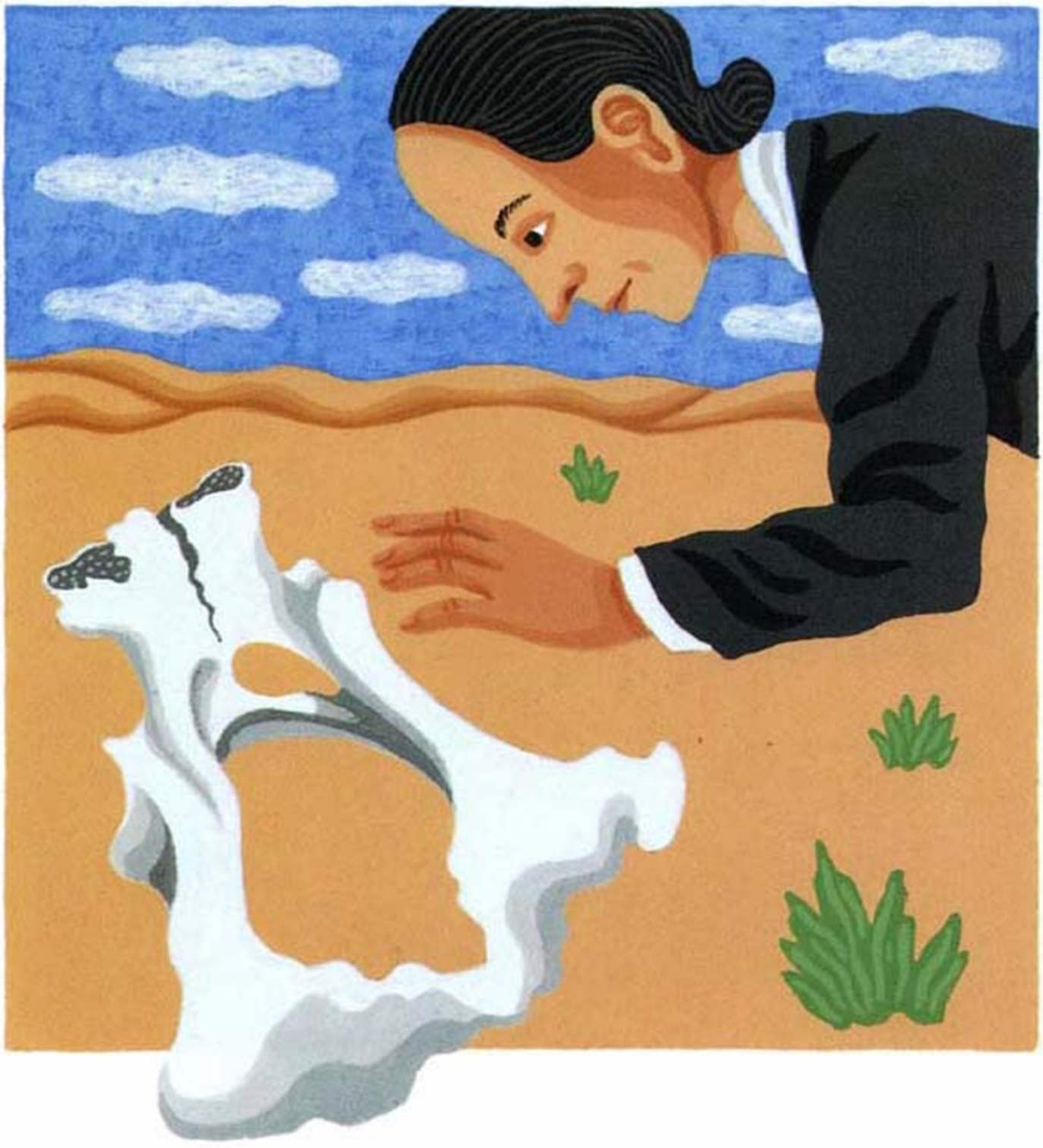

बहुत सूखा होने की वजह से, वहां फूल नहीं थे.
पर वहां सूखी हड्डियों की भरमार थी.

वहां मैंने हड्डियाँ इक्कट्ठी कीं –
बड़ी हड्डियाँ, छोटी हड्डियाँ, लम्बी हड्डियाँ,
गाय की खोपड़ी, घोड़े की खोपड़ी, भेड़ की खोपड़ी –
मैं उन हड्डियाँ को पेंट करने घर लाती.

एक दिन मैंने एक हड्डी को सामने रखकर
आसमान की ओर देखा,
उसके छेद में से मैंने नीले आसमान को निहारा.
मैंने जो देखा, वही मैंने पेंट किया.

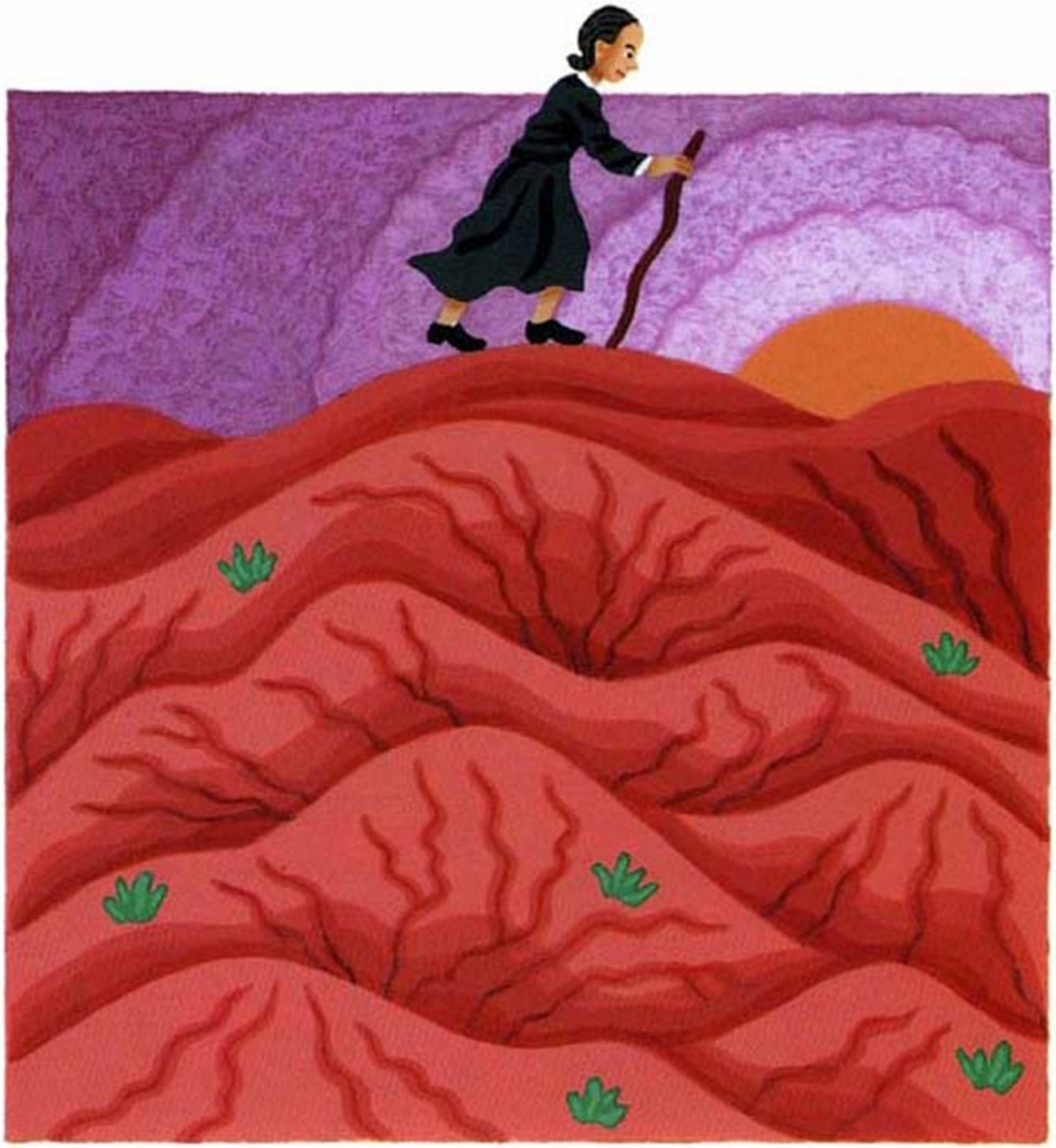

मैंने आसमान देखा –
और लाल पहाड़ियां देखीं.
मैं सुबह, दोपहर और शाम को
और तारों भरी रात में, उन पहाड़ियों में घूमी.

मैंने दो लाल पहाड़ियों के हाथ, पेंट किए,
पहाड़ियां अपने हाथों से आसमान को उठाए थीं.

मैंने दूर दिख रही पेडरनल पहाड़ियों को भी पेंट किया.
मैंने उन्हें बार-बार, कई बार पेंट किया.
उन्हें मैंने फिर दुबारा पेंट किया.

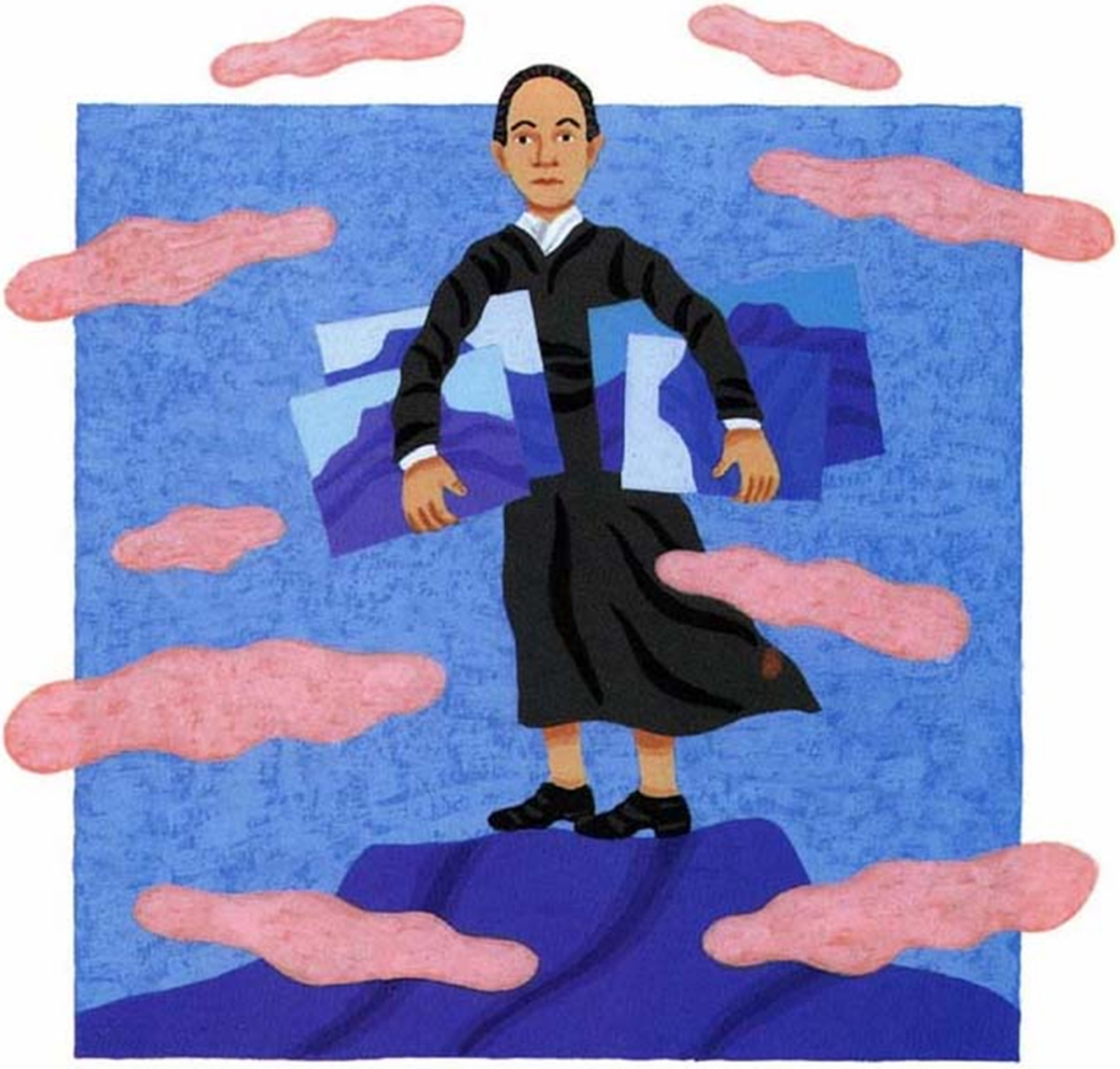

भगवान ने मुझसे कहा कि
अगर मैं उन पहाड़ियों को बार-बार पेंट करूं
तो वो उन्हें, मुझे दे देंगे.

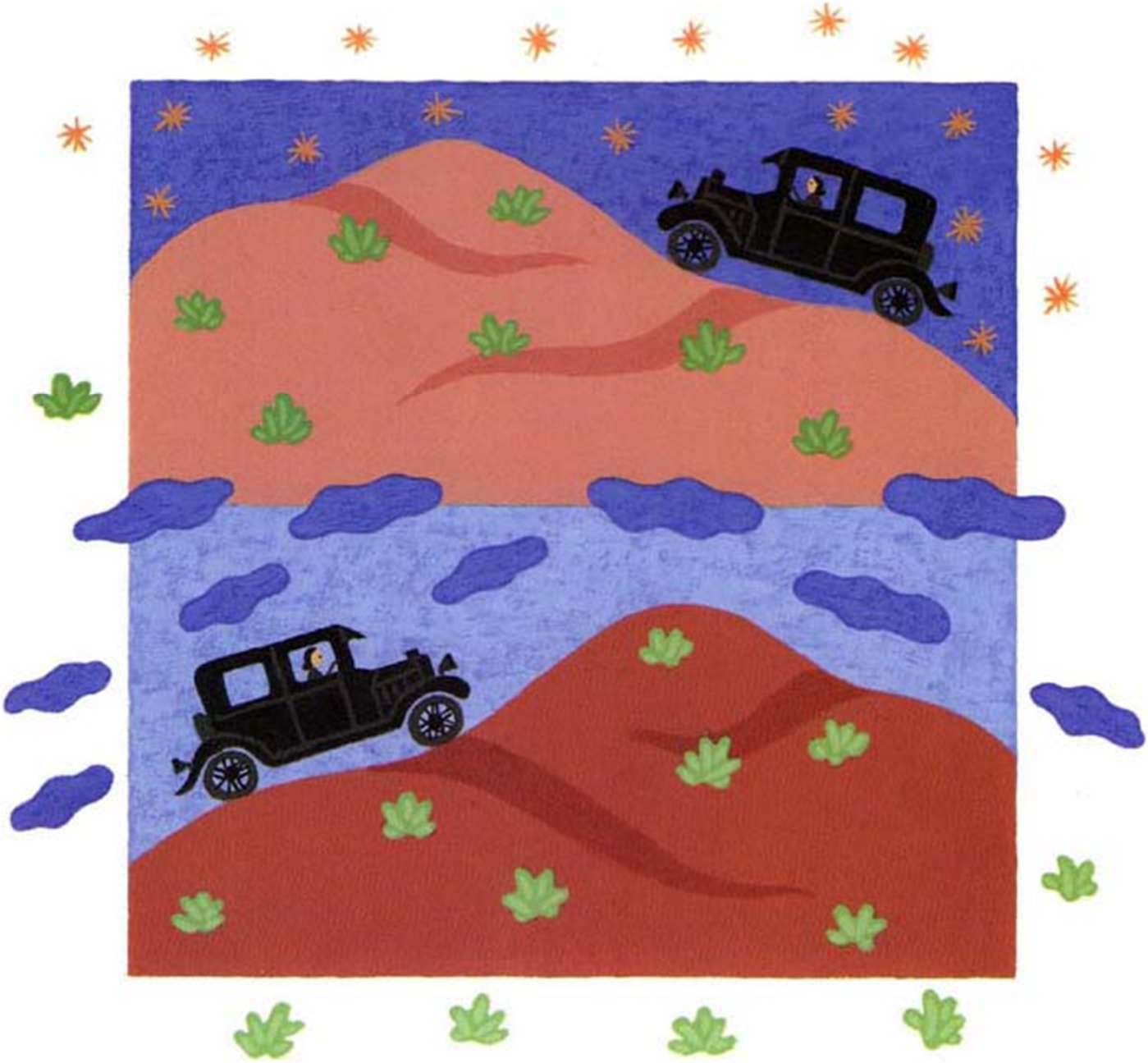

अपनी मोटरकार, मॉडल-A में मैंने,
पूरा रेगिस्तान छान मारा,
मैं वहां की सभी पहाड़ियों
पर चढ़ी और उतरी.

मैंने अपनी मोटरकार के स्टूडियो में बैठकर पेंट किया,
पर दोपहर को मधुमक्खियों ने मेरा पीछा किया और
मुझे घर वापिस जाने को मजबूर किया.

जाड़े में भी,
मैंने रेगिस्तान में दूर-दूर तक सफ़र किया
और चिलचिलाती ठण्ड में भी पेंट किया.

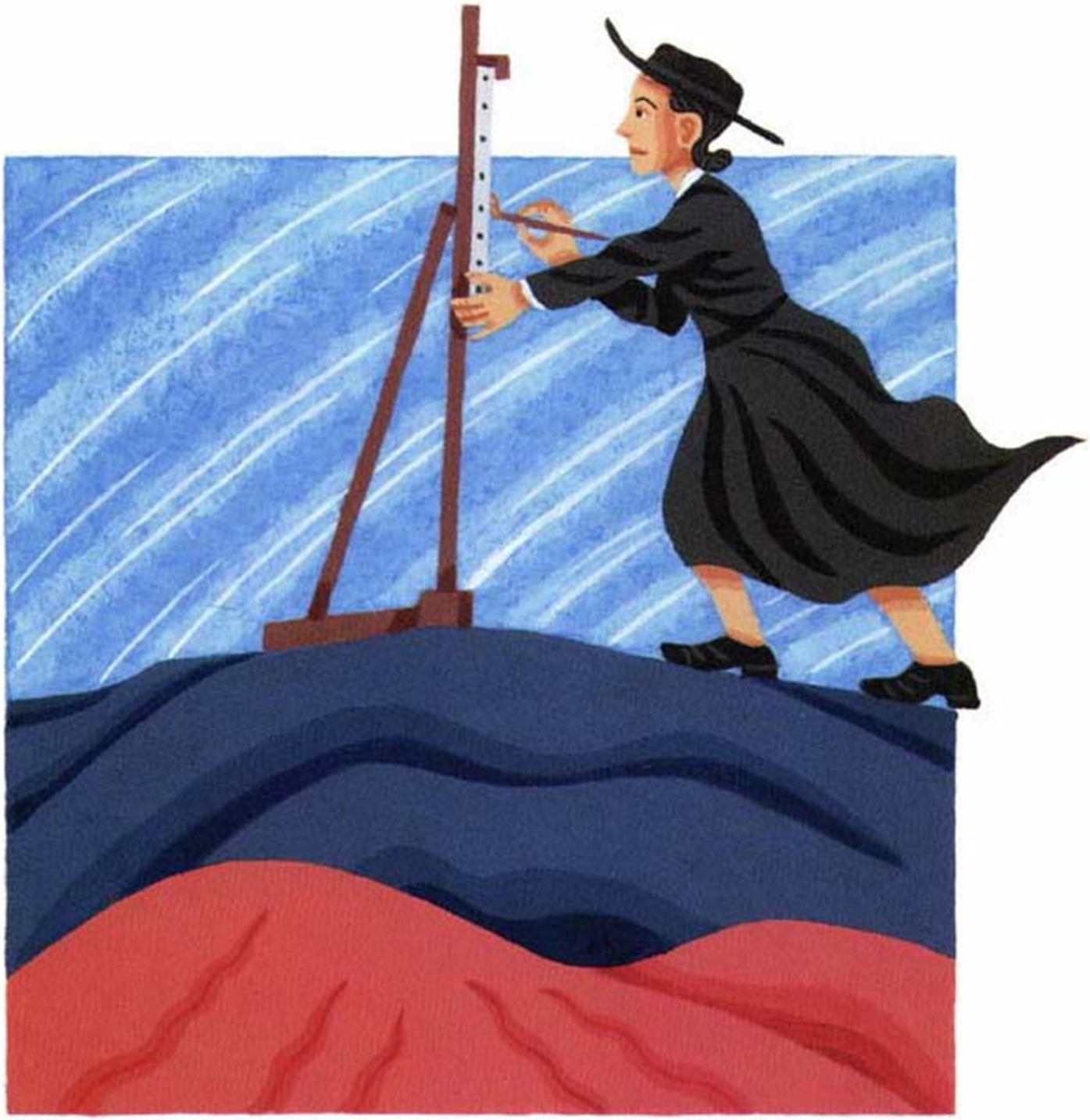

बहुत तेज़ हवा में भी
मैंने पेंट किया.
एक हवा का झोंका
मुझे लगभग उड़ाकर ले गया.

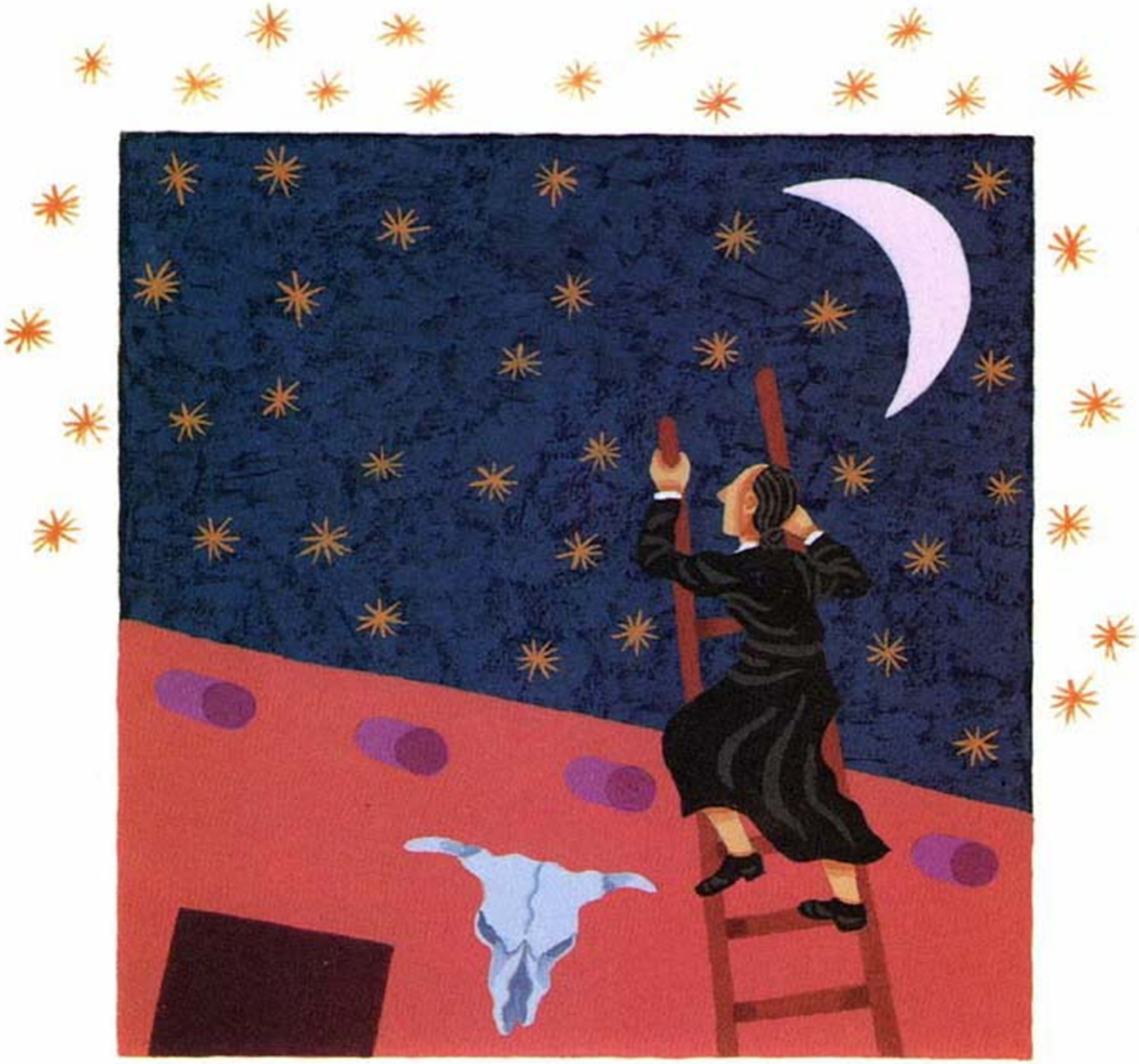

मैंने वो चीज़ें कीं,
जो अक्सर दूसरे लोग नहीं करते.
मैंने रात के आसमान की सीढ़ी चढ़कर
सुबह होने का इंतज़ार किया.

मैं तारों के नीचे सोई
जिससे उठने पर
मैं सुबह का आकाश निहार सकूं.

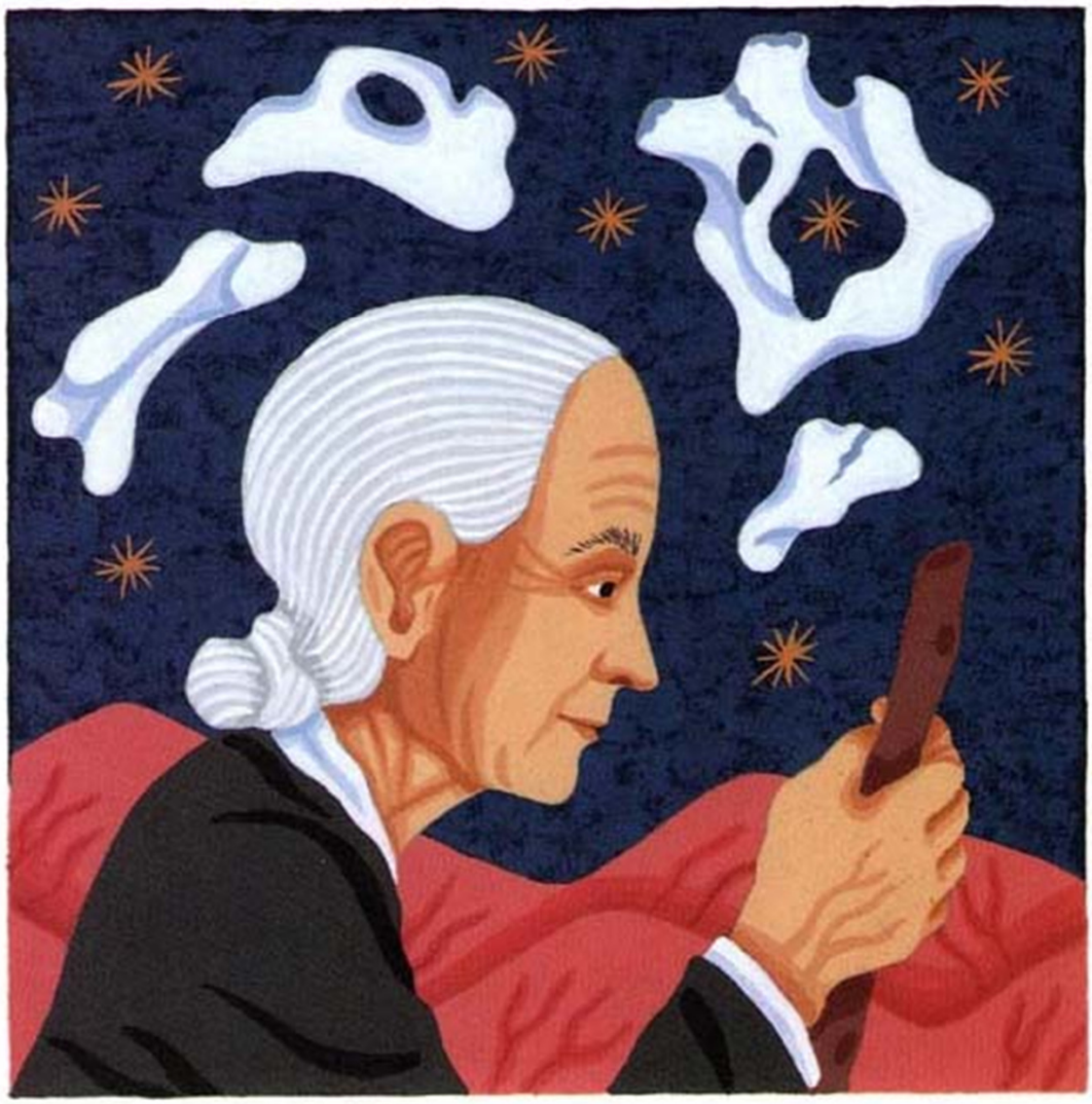

मैं रेगिस्तान में ही रही.

मेरे बाल, काले से सफ़ेद हो गए.

मेरे बाल, हड्डियों जैसे सफ़ेद हो गए.

पर मैं अभी भी उन लाल पहाड़ियों पर चलती हूँ.

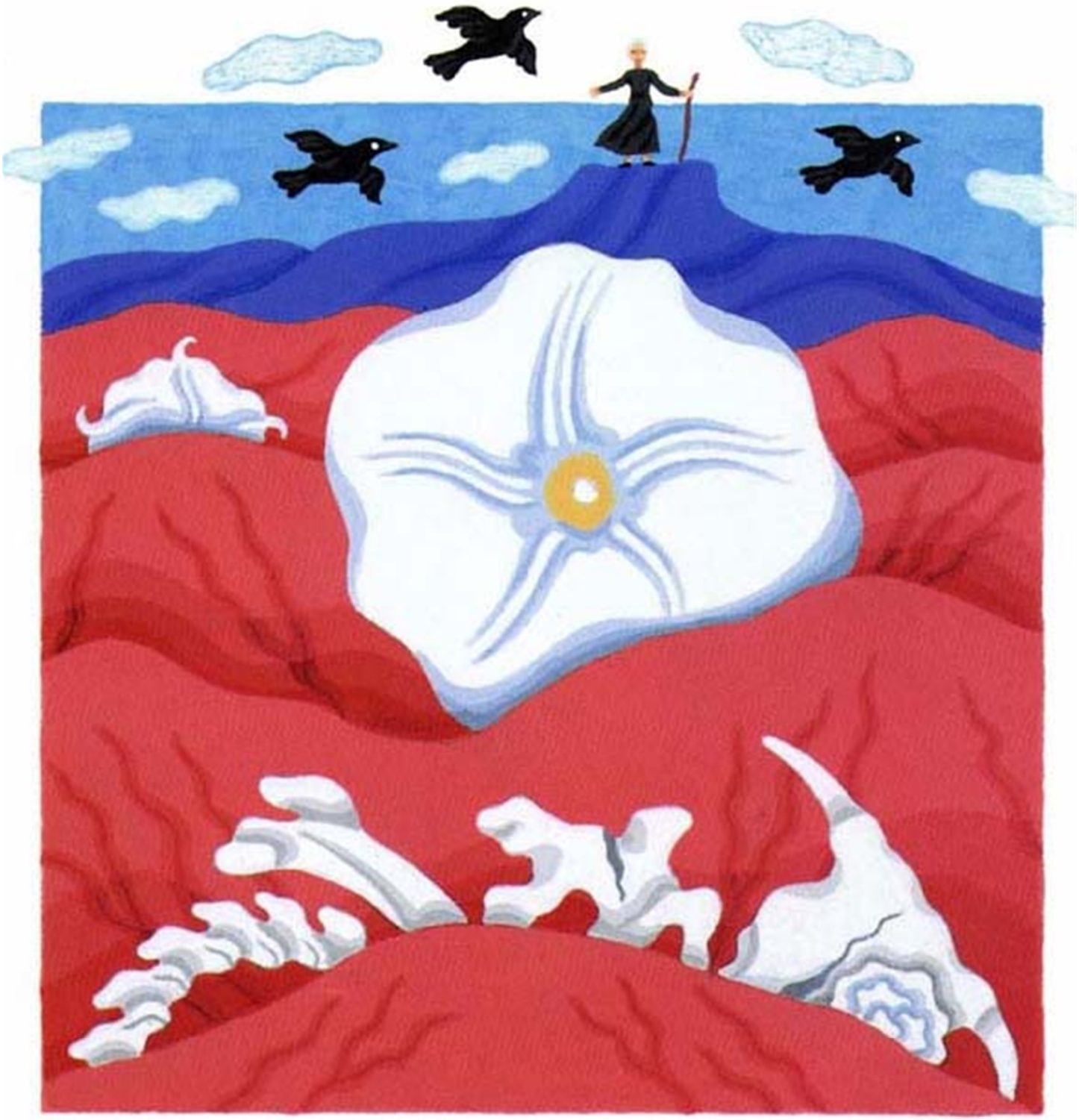

धीरे-धीरे, मेरी हड्डियों का ढेर बढ़ता गया,
मेरे फूल रेगिस्तान में फूलने लगे.
अंत में पेडरनल पहाड़ियां, मेरी अपनी हो गईं.

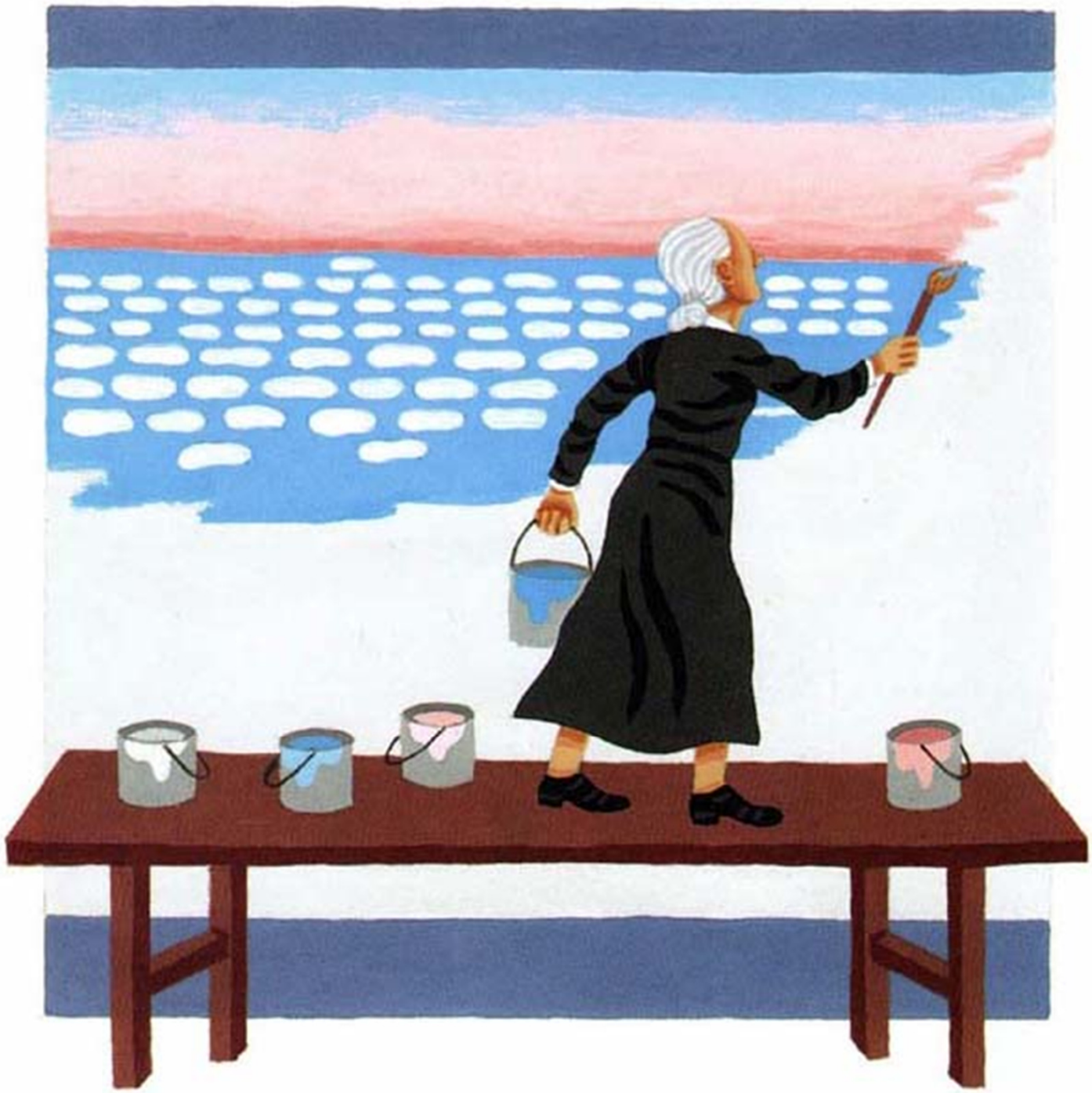

और आसमान – जो अभी भी बेहद खूबसूरत था!

मैंने उसे दुबारा पेंट किया.

मैंने बहुत बड़ा आसमान पेंट किया.

जिससे लोग आसमान को वैसे ही देख सकें

जैसे मैं उसे देखती थी.

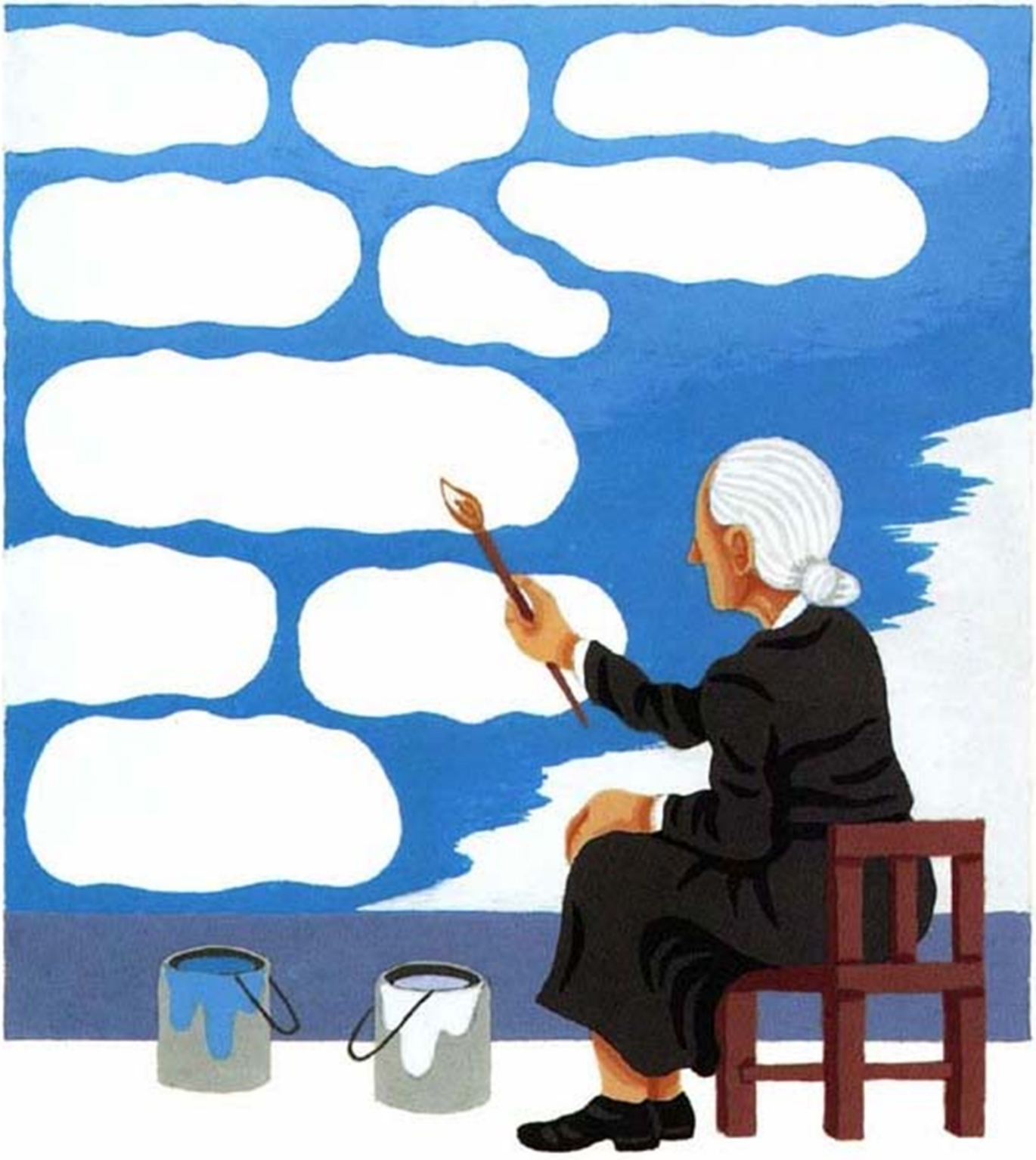

मैं रोजाना, सुबह से शाम तक, पेंट करती थी.
यह सिलसिला हफ़्तों, महीनों ज़ारी रहता था.

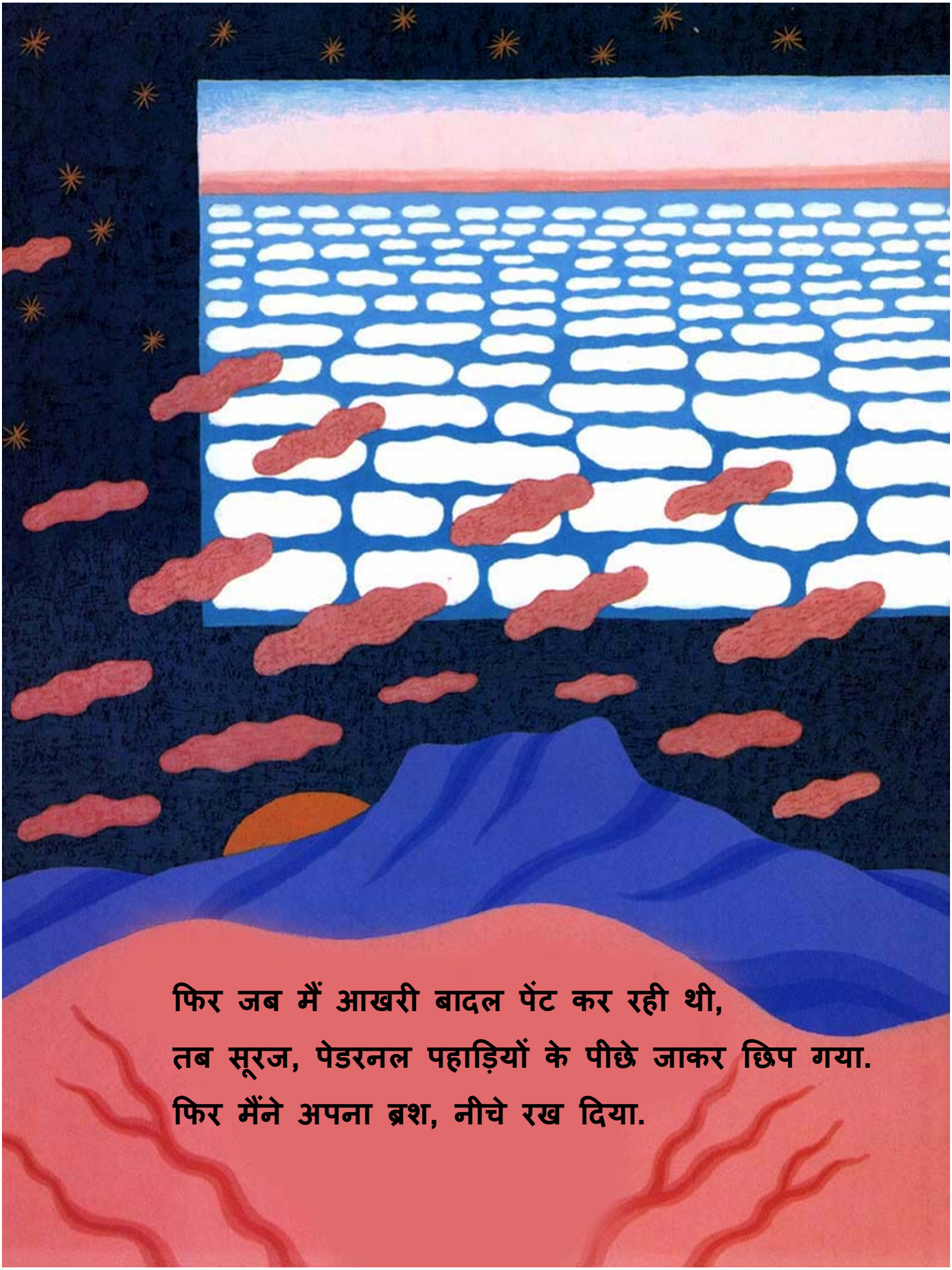

फिर जब मैं आखरी बादल पेंट कर रही थी,
तब सूरज, पेडरनल पहाड़ियों के पीछे जाकर छिप गया.
फिर मैंने अपना ब्रश, नीचे रख दिया.

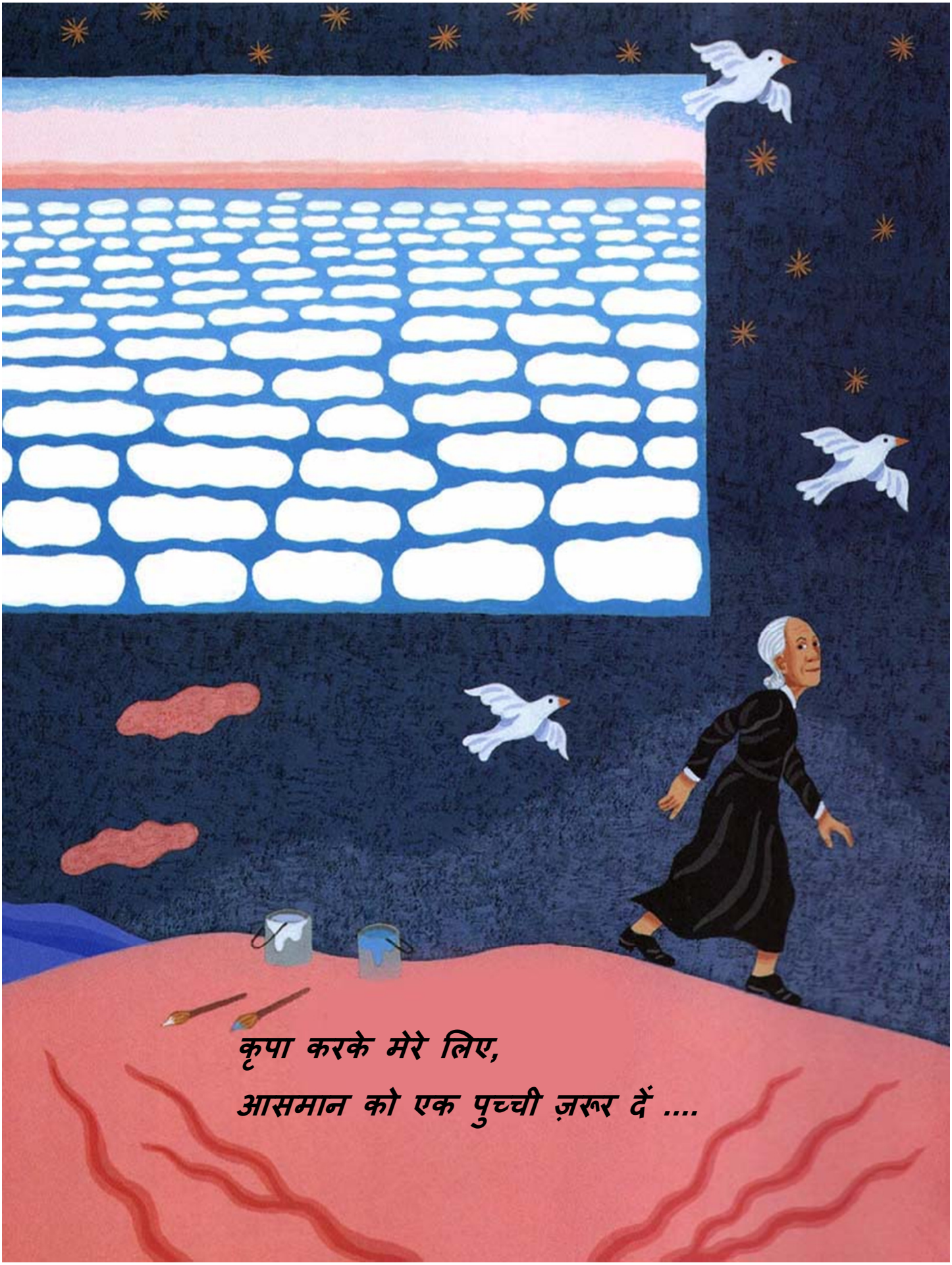
कृपा करके मेरे लिए,
आसमान को एक पुच्ची ज़रूर दें ....

जॉर्जिया ओकीफ 98 वर्ष तक जीवित रहीं.

अमरीका भर में फैले म्यूजियम्स में, लोग उनके पेंट किये फूल, रेगिस्तान, पहाड़ियां, शहर और आसमान देख सकते हैं – बिल्कुल वैसे ही जैसे वो खुद उन्हें देखती थीं.